Vol 6 Issue 8 May 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | MAY - 2017

REVIEW OF RESEARCH

हरियाणवी : लोकसाहित्य और संस्कृति

सुनील कुमार सुपुत्र श्री फकीर चन्द
पीएच॰ डी॰ शोधार्थी , हिन्दी विभाग ,
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

प्रस्तावना :
हरियाणा का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध लोकसाहित्यों में से एक है। लोकसाहित्य में वहाँ की मिट्टी की महक होती है तथा मिट्टी से जुड़ा साहित्य अपनी परिधि में सहजता तथा सम्प्रेषणीयता जैसे गुणों को संजोकर रखता है । जिस प्रकार पर्वत से निर्झर बहते हैं उसी प्रकार लोकसाहित्य भी लोक या जनसमूह से उत्पन्न होता है । लोकसाहित्य लोगों का मनोरंजन करने के साथ–साथ उनके ज्ञान में भी वृद्धि करता है। हरियाणवी लोकसाहित्य में लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा, लोकगाथा, चुटकले, लोकोक्ति और मुहावरे प्रमुख रूप महत्वपूर्ण हैं । हरियाणवी सांग तथा रागनियाँ तो अपनी परिधि में लोकसाहित्य के सर्वगुणों को सम्मिलित करती हुई लोगों का मनोरंजन तो करवाती ही हैं साथ ही ज्ञानविस्तार का भी महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं ।
संस्कृति की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है । संस्कार से अभिप्रायः संशोधन तथा उत्तम बनाने वाले कार्य से है । इस प्रकार संस्कृति किसी देश की परंपराओं, मान्यताओं एवं मूल्यों का परिष्कृत संचित कोष होता है। संस्कृति का प्रभाव हम लोगों के सामाजिक जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं । संस्कृति के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी नैतिक मूल्यों, आदर्शों, परम्पराओं, मान्यताओं, रूढ़ियों, रीति–रिवाजों एवं रहन–सहन इत्यादि से हम अवगत होते हैं । हरियाणवी संस्कृति में हम लोकजीवन को देखने के साथ–साथ वहाँ की नैतिकता से भी रू–ब–रू होते हैं ।

हरियाणवी लोकसाहित्य
लोकगीत : लोकगीत के माध्यम से मनुष्य अपने हृदय के भावों की अभिव्यक्ति करता है । लोकगीतों में मनुष्य अपने सुख–दुःख दोनों प्रकार के भावों को व्यक्त करता है । लोकगीतों में लोकसंस्कृति की सच्ची मधुर और मनमोहक अभिव्यक्ति होती है । हरियाणवी लोकगीतों में ऋतु संबंधी गीत, संस्कार गीत, सांस्कृतिक गीत, कृषि एवं दिनचर्या के गीत, भक्ति–नीति सम्बन्धी गीत, देश–प्रेम संबंधी गीत, बालगीत इत्यादि प्रमुख है। । उदाहरण के लिए हरियाणा में 'कोथली' और '–संधारे' का रिवाज है । ससुराल में लड़की सावन मास में आने वाले इस त्यौहार का बेसब्री से इतंजार करती है –

"बाग मैं पपैया बोला सामण कदनै आवेगा ।
नीम की निबौली पाकी सामण कदनै आवेगा ।
आवेगा भी आवेगा, मेरी माँ का जाया आवेगा ।"[1]

लोककथा : लोककथा में हमारे समाज के विभिन्न प्रकार के विचारों, भावनाओं, आशाओं–आंकाक्षओं एवं स्वप्नों का सामूहिक रूप उभर कर सामने आता है । लोककथाएँ मनुष्य को असफलता से सफलता की ओर, निराशा से आशा की ओर अग्रसर करती है । लोककथाएं मनुष्य में जय–पराजय सुख–दुःख, जीवन–मृत्यु इत्यादि अवसरों पर उसके साहस को बांधे रखने में सहायता करती हैं । डॉ॰ बाबूराम के अनुसार – "मूलतः लोककथाएँ परम्परागत मौखिक रूप से प्रचलित, कालांतर में लिपिबद्ध कहानियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिनकी विषयवस्तु धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक होती है जो आम आदमी की सांस्कृतिक आस्था का प्रतिनिधित्व करती है ।"[2]

1.लोकोक्तियाँ : हरियाणवी लोकोक्तियों में जीवन दर्शन का बखुबी वर्णन किया गया है । लोकोक्तियाँ कदम–कदम पर जीवन में उत्साह एवं आत्मविश्वास जगाती है तथा साथ–साथ जीवन में सांसारिक बाधाओं से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करती है । हरियाणा में कोई भी विषय चाहे सरल हो या गंभीर, हास्य विनोद का अवसर हो या शादी–ब्याह का कार्यक्रम प्रसंगवश लोकोक्ति अपने आप मुंह पर चढ़ जाती है जैसेकि –

"कुम्हार कुम्हारी पै बस ना चालै गधे के कान ऐठें ।"
"दबके बाह, रजके खा"
"ब्याही दगा दे दे, पर बाही दगा न दे ।"
"जिसकी लाठी, उसकी भैंस"

"एक चुप सौ न हरावै ।"[3]

2.हरियाणवी सांग : किशनलाल भाट हरियाणवी सांग परंपरा के इतिहास पुरुष है । इनके बाद दीपचन्द, हरदेवा, पंडित लख्मीचंद तथा पंडित मांगेराम का नाम आता है । सांग विधा में पंडित लखमीचंद को विशेष ख्याति प्राप्त है इसी कारण इन्हें सांग सम्राट तथा हरियाणा का सूर्यकवि कहा जाता है । हरियाणवी सांगों में यहाँ की संस्कृति बोलती है । सांगों में हमारा पारिवारिक–सामाजिक परिवेश चित्रित होता है । सुख–दुःख,, अश्रु–हास, विरह–मिलन, तप–त्याग, पाप–पुण्य, ईर्ष्या–प्रेम आदि के समायोजन से कथा में मार्मिकता तथा मोड़ आते रहते है । सांग के माध्यम से यहाँ के लोगों की भावनाओं, कल्पनाओं और अभिरूचियों को अभिव्यक्ति मिलती है । सांग में संगीत, नृत्य और गीतों की त्रिवेणी होती है। जब सांगी अपना एक हाथ कान पर धरकर और दूसरा ऊपर उठाकर अभिनय करते हुए रागिनी गाता है तो दर्शक मंत्रमुग्ध हो उठता है । प्रायः सांग में किसी स्थानीय लोकप्रिय कथानक को आधार बनाकर गीत गाकर अभिनय द्वारा ऐसा समय बाँधा है कि मंच के चारों ओर बैठे लोग वाह–वाह कर उठते है। । सांग में सभी रसो को लिया जाता है लेकिन प्रधानता हास्य रस की ही होती है ।

हरियाणा में सांगों के माध्यम से सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक जागरण का कार्य भी किया जाता है । दहेज प्रथा, रिश्वत खोरी, मद्यपान, जुआ खेलना, सूद खोरी आदि बुराईयों के खिलाफ जनमत तैयार किया जाता है ।

3.हरियाणवी रागिनी : रागिनी हरियाणवी समाज का एक ऐसा दर्पण है जिसमें समाज के जीवन का, उसके विचरांे, भावनाओं, कल्पनाओं, आकांक्षाओं, परम्पराओं, संस्कारों, क्रियाओं, सभ्यता, संस्कृति एवं मान्यताओं आदि का सुन्दर रूप प्रतिबिम्बित होता है । रागिनी में समाज कल्याण के साथ–साथ मनोरंजन भी रहता है । रागिनी का रचयिता अशिक्षित होते हुए भी समस्त मानव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है । रागिनी में लोकजीवन के सामान्य चित्रण आना स्वाभाविक है रागिनी में टेक रहती है । रागिनी में रस, लय, माधुर्य एवं मनोरंजन है । रागिनी गाते समय प्रत्येक कली के अन्त में टेक की सामुहिक आवृत्ति होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रागिनी में सुर, ताल, लय एवं तर्ज होते हैं तथा इसकी भाषा जनसाधारण की होती है ।

इन प्रमुख विधाओं के अतिरिक्त लोककथा, भजन, मुहावरे तथा अन्य अनेक स्फूट विधाओं से हरियाणवी लोकसाहित्य एक समृद्ध लोकसाहित्य है ।

हरियाणवी संस्कृति :

हरियाणवी संस्कृति का देश में महत्त्वपूर्ण स्थान है । कहा भी जाता है कि 'देसां मैं देस हरियाणा, जित दुध दही का खाना ।" हरियाणा की संस्कृति में सादगी तथा सरलता के दर्शन होते हैं । हरियाणा के लोगों का नृत्य जैसे रास नृत्यु, खोड़ियां नृत्य, डफ नृत्यु, लूर नृत्य, धमाल नृत्य, गूगा छड़ी नृत्य, सांग नृत्य, झूमर नृत्य, घोड़ी नृत्य, खेड़्डा नृत्य तथा धूमर नृत्य हरियाणवी संस्कृति की विविधता के दर्शन करवाते हैं । हरियाणा की वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला तथा लोककला हरियाणवी संस्कृति की विविधता को दर्शाते हैं । हरियाणा के लोगों की दिनचर्या बहुत सरल और नियमित है । हरियाणा के लोग प्रातःकाल उठकर भगवान का ध्यान करके खेतों में अपनी अजीविका के लिए चले जाते है। और सांयकाल घर लौटते हैं । पुरुष पशुओं का चारा डालने, दूध निकालने का काम निपटाते हैं तो महिलाएँ झाडू–बुहारी करके आटा पीसना, दूध बिलौना, गोबर उठाना, भोजन तैयार करना, कुँए से पानी भरने का काम करती है। महिलाएं घर भी संभालती है और खेतों में पुरुषों की सहायता भी करती है । आधुनिक युग विज्ञान एवं तकनीक का युग है अब लोगों की दिनचर्या में काफी परिवर्तन हो गया है ।

हरियाणा के लोगों के पहनावे में धोती, कुर्त्ता, सिर पर साफा, कन्धे पर दुपट्टा या चादर तथा पैरों में जूती, ये पाँच सामान्य परिधान है । हरियाणा की स्त्रियाँ ओढ़नी, वक्ष पर अंगी तथा कटि पर घाघरा, ये वस्त्र पहनती थी । 52 गज का घाघरा हरियाणा में विशेष लोकप्रिय रहा है, जिसमें अनेक कलियाँ होती हैं इसे दामण भी कहा जाता है । हरियाणा के रीति–रिवाजों में, पर्व, मेले, त्यौहारों तथा लोकविश्वास हरियाणवी संस्कृति की समृद्धि में गौरवपूर्ण हैं । हरियाणा के निवासी आस्थावान, विश्वासी तथा धर्मपरायण होते हुए कर्मठता, साहस तथा वीरता को दर्शाते हैं ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं हरियाणा की संस्कृति तथा लोकसाहित्य हरियाणवी जीवन दर्शन का समग्र चित्रण कराने में सक्षम है। । हरियाणवी लोकगीत, लोककथा, लोकोक्तियाँ, हरियाणवी सांग, रागिनी इत्यादि विधाएँ लोकसाहित्य की समृद्धि करती हुई हमारी सांस्कृतिक विरासत को कायम रखने में महत्त्वपूर्ण स्थान दे रही है । निष्कर्षतः हरियाणा का लोकसाहित्य ज्ञानवर्धन और परम्पराओं का जीवित प्रतिबिम्ब हैं ।

संदर्भ :

1.डॉ॰ बाबू राम, हरियाणवी भाषा और साहित्य, प्रकाशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, संस्करण, 2011, पृ॰ 51
2.वही, पृ॰ 63
3.वही, पृ॰ 86–87
4.डॉ॰ पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणवी साहित्य और संस्कृति, प्रकाशन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
5.डॉ॰ रेखा शर्मा, हरियाणा के लोकगीतों में भक्ति भावना, प्रकाशन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, संस्करण, 2005, पृ॰ 13–16
6.हरिगंधा, हरियाणा विशेषांक, नवम्बर 87, फरवरी 88, संपादक, रूपनारायण शर्मा, सह संपादक, डॉ॰ सोमदत्त बंसल, प्रकाशन, हरियाणा साहित्य अकादमी
7.डॉ॰ देवी शंकर द्विवेदी, संभावना, लोकसाहित्य विशेषांक, जून 1996, हिन्दी विभाग, कु॰ वि॰ कु॰
8.मीरा गौतम, संभावना, हरियाणवी लोकसाहित्य विशेषांक, वर्ष 31, अंक 22, 2003, हिन्दी विभाग, कु॰ वि॰ कु॰

सुनील कुमार सुपुत्र श्री फकीर चन्द
पीएच॰ डी॰ शोधार्थी , हिन्दी विभाग ,कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/